

रविवार 18 मई, 2025

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 17 : 3

"और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। "

उत्तरदायी अध्ययन: 1 कुरिन्थियों 15 : 19-26

- 19 यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं॥
20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ।
21 क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुआओं का पुनरुत्थान भी आया।
22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।
23 परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग।
24 इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।
25 क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है।
26 सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. प्रेरितों के काम 9 : 1-22

- 1 और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया।
2 और उस से दमिश्क की अराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्ध कर यरूशलेम में ले आए।

- 3 परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।
- 4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
- 5 उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है।
- 6 परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो कुछ करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।
- 7 जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे।
- 8 तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखे खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दमिश्क में ले गए।
- 9 और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।
- 10 दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हां प्रभु।
- 11 तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।
- 12 और उस ने हनन्याह नाम एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर आते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।
- 13 हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयां की हैं।
- 14 और यहां भी इस को महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बान्ध ले।
- 15 परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्त्राएलियों के साम्हने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।
- 16 और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।
- 17 तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।
- 18 और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन कर के बल पाया॥
- 19 और वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे।
- 20 और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है।
- 21 और सब सुनने वाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहां भी इसी लिये आया था, कि उन्हें बान्ध कर महायाजकों के पास ले आए?
- 22 परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहने वाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा॥

2. प्रेरितों के काम 3 : 19

- ¹⁹ इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएंगे।

3. 1 कुरिन्थियों 15 : 53, 54

- ⁵³ क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
⁵⁴ और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

4. रोमियो 12 : 1, 2

- ¹ इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
² और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

5. गलातियों 6 : 7-9, 16

- ⁷ धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
⁸ क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
⁹ हम भले काम करने में हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
¹⁰ इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ॥
¹⁶ और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्त्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे॥

6. 2 तीमुथियुस 1 : 7-10

- ⁷ क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।
⁸ इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा।

- ⁹ जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।
- ¹⁰ पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 502 : 28-5

ब्रह्मांड ईश्वर को दर्शाता है। लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं। ये विचार अनंत से लेकर अनंत तक हैं, और उच्चतम विचार ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

2. 42 : 26 (में)-28

... ईसाई विज्ञान में सच्चा मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित है - अच्छाई से, बुराई से नहीं - और इसलिए वह नश्वर नहीं बल्कि अमर है।

3. 259 : 6 (में)-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

4. 260 : 7-12

नश्वर, त्रुटिपूर्ण विचार की धारणाओं को उन सभी के आदर्श को रास्ता देना चाहिए जो परिपूर्ण और शाश्वत हैं। कई पीढ़ियों के माध्यम से मानव विश्वास दिव्य अवधारणाओं को प्राप्त कर रहे होंगे, और ईश्वर की रचना का अमर और आदर्श मॉडल अंततः अस्तित्व की एकमात्र सच्ची अवधारणा के रूप में देखा जाएगा।

5. 324 : 19-26

पॉल पहले यीशु का शिष्य नहीं था बल्कि यीशु के अनुयायियों का सताने वाला था। जब सत्य पहली बार उसे विज्ञान में दिखाई दिया, तो पॉल को अंधा बना दिया गया, और उसका अंधापन महसूस किया गया; लेकिन

आध्यात्मिक प्रकाश ने जल्द ही यीशु के उदाहरण और शिक्षाओं का पालन करने, बीमारों को चंगा करने और पूरे एशिया माइनर, ग्रीस और यहां तक कि शाही रोम में ईसाई धर्म का प्रचार करने में सक्षम बनाया।

6. 326 : 23-32

टार्सस के शाऊल ने मसीह, मार्ग या सत्य को देखा - केवल तभी जब उसके अधिकार की अनिश्चित भावना एक आध्यात्मिक अर्थ के लिए झुकी, जो हमेशा सही होती है। फिर वह आदमी बदल गया। विचार ने एक महान दृष्टिकोण ग्रहण किया, और उसका जीवन अधिक आध्यात्मिक हो गया। जिन ईसाइयों का धर्म वह नहीं समझते थे, उन्हें सताने में उन्होंने जो गलत काम किया है, उसे वह समझ गया और नम्रता से उसे पॉल का नया नाम मिला। उन्होंने पहली बार प्रेम के सच्चे विचार को देखा, और दिव्य विज्ञान का पाठ सीखा।

7. 475 : 31-5

एक नश्वर पापी भगवान का आदमी नहीं है। नश्वर अमर के नकली हैं। वे दुष्ट की संतान हैं, या एक बुराई, जो घोषणा करती है कि मनुष्य धूल में या भौतिक भ्रूण के रूप में शुरू होता है। दिव्य विज्ञान में, ईश्वर और वास्तविक मनुष्य ईश्वरीय सिद्धांत और विचार के रूप में अविभाज्य हैं।

8. 476 : 10-13, 21-22, 28-7

इसलिए मनुष्य न तो नश्वर है और न ही भौतिक। नश्वर गायब हो जाएंगे, और अमर होंगे, या भगवान की संतान, मनुष्य के एकमात्र और अनन्त सत्य के रूप में दिखाई देंगे।

इसे जानें, नश्वर, और ईमानदारी से मनुष्य की आध्यात्मिक स्थिति की तलाश करें, जो सभी भौतिक स्वार्थ से अप्रासंगिक है।

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है। यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया। इस प्रकार यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अक्षुण्ण, सार्वभौमिक है, और वह मनुष्य शुद्ध और पवित्र है। मनुष्य आत्मा के लिए भौतिक आवास नहीं है; वह स्वयं आध्यात्मिक है।

9. 285 : 2-14

मनुष्य का व्यक्तित्व भौतिक नहीं है। अस्तित्व का यह विज्ञान केवल इसके बाद ही नहीं, जिसे लोग स्वर्ग कहते हैं, प्राप्त करता है, बल्कि यहीं और अभी प्राप्त करता है; यह समय और अनंत काल तक अस्तित्व का महान तथ्य है।

तो फिर, वह भौतिक व्यक्तित्व क्या है जो भोगता है, पाप करता है और मर जाता है? यह मनुष्य नहीं है, परमेश्वर की छवि और समानता है, बल्कि मनुष्य की नकली, उलटी समानता, पाप, बीमारी और मृत्यु नामक विषमता है। दावे की असत्यता कि एक नश्वर भगवान की सच्ची छवि है आत्मा और पदार्थ, मन और शरीर के विपरीत संकेत द्वारा सचित्र है, क्योंकि एक बुद्धि है, जबकि दूसरा गैर-बुद्धि है।

10. 409 : 20-26

वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और अमर है, लेकिन नश्वर और अपूर्ण तथाकथित "मनुष्य की संतान" शुरू से ही नकली हैं, जिन्हें शुद्ध वास्तविकता के लिए अलग रख दिया जाना चाहिए। इस नश्वर को उतार दिया जाता है, और नए मनुष्य या वास्तविक मनुष्य को धारण किया जाता है, यह अनुपात इस प्रकार है कि नश्वर मनुष्य के विज्ञान को समझते हैं और सच्चे आदर्श की खोज करते हैं।

11. 296 : 4-13

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है। या तो यहां या उसके बाद, पीड़ित या विज्ञान को जीवन और मन के बारे में सभी भ्रमों को नष्ट करना होगा, और भौतिक भावना और स्वयं को पुनः उत्पन्न करना होगा। अपने कर्मों के साथ पुरानी मानवता को बंद करना होगा। कामुक या पापी कुछ भी अमर नहीं है। एक झूठी भौतिक भावना और पाप की मृत्यु, कार्बनिक पदार्थों की मृत्यु नहीं है, जो मनुष्य और जीवन, सामंजस्यपूर्ण, वास्तविक और शाश्वत को प्रकट करती है।

12. 295 : 11-24

ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

नश्वर के माध्यम से ईश्वर का प्रकट होना खिड़की के शीशे से गुजरने वाले प्रकाश के समान है। प्रकाश और कांच कभी आपस में नहीं मिलते हैं, लेकिन बात यह है कि कांच दीवारों की तुलना में कम अपारदर्शी है। नश्वर मन जिसके माध्यम से सत्य सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, वह है जिसने सत्य के लिए एक

बेहतर पारदर्शिता बनने के लिए बहुत अधिक भौतिकता - बहुत त्रुटि - खो दी है। फिर, जैसे बादल पिघलकर पतले वाष्प में बदल जाता है, यह अब सूर्य को नहीं छिपाता है।

13. 200 : 16-19

अस्तित्व के विज्ञान में महान सत्य, कि वास्तविक मनुष्य था, है, और हमेशा रहेगा, निर्विवाद है; क्योंकि यदि मनुष्य परमेश्वर का प्रतिबिम्ब, और प्रतिबिम्ब है, तो वह न तो उलटा है, और न उलटा, परन्तु सीधा और परमेश्वर जैसा है।

14. 288 : 27-28

विज्ञान अमर मानव की गौरवशाली संभावनाओं को प्रकट करता है, नश्वर इंद्रियों द्वारा हमेशा के लिए असीमित।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6